बालगीत
लेखक
श्रीनाथसिंह
मूल्य ।)

## श्यामबिहारी

नाम इनका है श्यामबिहारी ।
कारीगर ये होंगे भारी ॥
नहीं छोड़ते काम अधूरा ।
ध्यान लगाते हैं ये पूरा ॥

सब गुन सीख तुरत ये जाते ।
नहीं जरा भी हैं घबराते ॥
मेहनत का फल पावेंगे ये
माँ के लाल कहावेंगे ये

# जादूगर और डाकू

( १ )

चीन देश का जादूगर,
जाता था जब अपने घर।
मिले राह में उसको डाकू,
लिए तेज तलवार व चाकू।

( २ )

बिल्ली जैसे चूहे पर,
यों दोनों झपटे उस पर।
जादूगर हो गया खड़ा,
अचरज उसको हुआ बड़ा।

( ३ )

किया देवता का सुमिरन,
मन्त्र पढ़ा उसने फौरन।
पिघलीं तलवारें ज्यों पानी,
लखो डाकुओं की हैरानी।
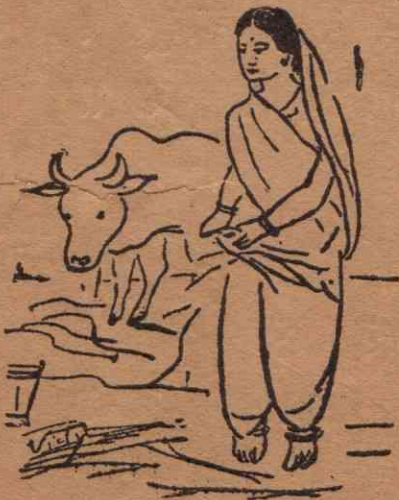
## श्यामा की गाय

यह देखो श्यामा की गाय।
बड़े प्रेम से चारा खाय।

चारा खाकर दूध दही दे।
मक्खन, घी दे और मही दे।

# नन्हा मुन्ना

नन्हा मुन्ना रोता है ।
आँसू से मुँह धोता है ।
जब तक अम्मा घर में रहती ।
तब तक सुख से सोता है ।

अम्मा अगर कहीं जाती है ।
मुन्ना धीरज खोता है ।
नहीं डराने से डरता है ।
नहीं जरा चुप होता है ।
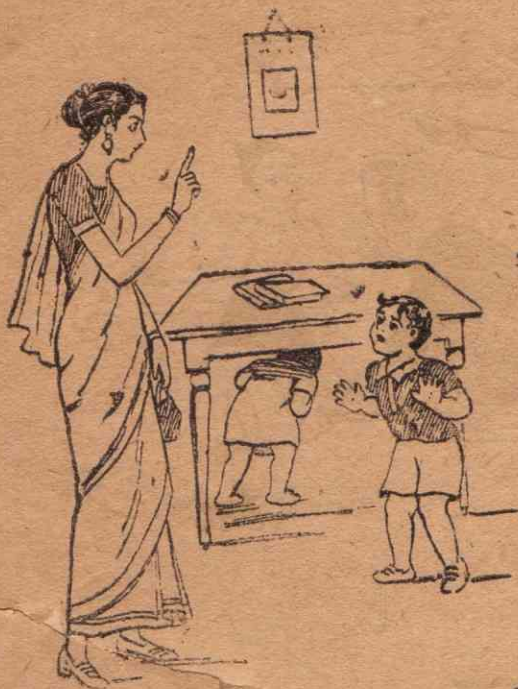
# खेल

ये बाबू जी की पुस्तक हैं, इनको यहाँ कौन लाया ?
कहकर अम्मा ने बच्चों को, नकली गुस्सा दिखलाया ।
मुनिया छिपी मेज के नीचे, माधव पर रह गया खड़ा ।
नकली डर दिखलाया उसने, था वह भी चालाक बड़ा ।

बच्चों को यों डरा देखकर ।
माँ ने उनसे मेल किया ।
चुपके से तब मुनिया बोली——
कैसा अच्छा खेल किया ॥

—o—

# मुन्नी और पिल्ला
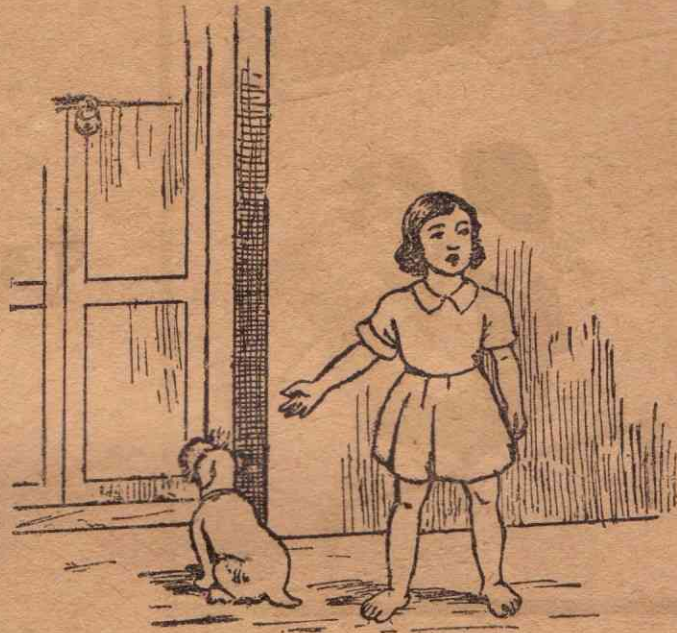
मुन्नी अभी बहुत छोटी है। इससे कहीं न जाने पाती।
खाती एक कौर रोटी है। बहुत बहुत रोती चिल्लाती।
छोटा अन्तर कैसे आवे? उसका नन्हा पिल्ला रोता।
राह भूल जब घर की जावे। पूं पूं करता धीरज खोता।

हो उदास मुन्नी कहती तब—
पिल्ला बहुत दुखी है माँ अब!
इसको तो बाहर जाने दो।
थोड़ा खेल कूद आने दो।
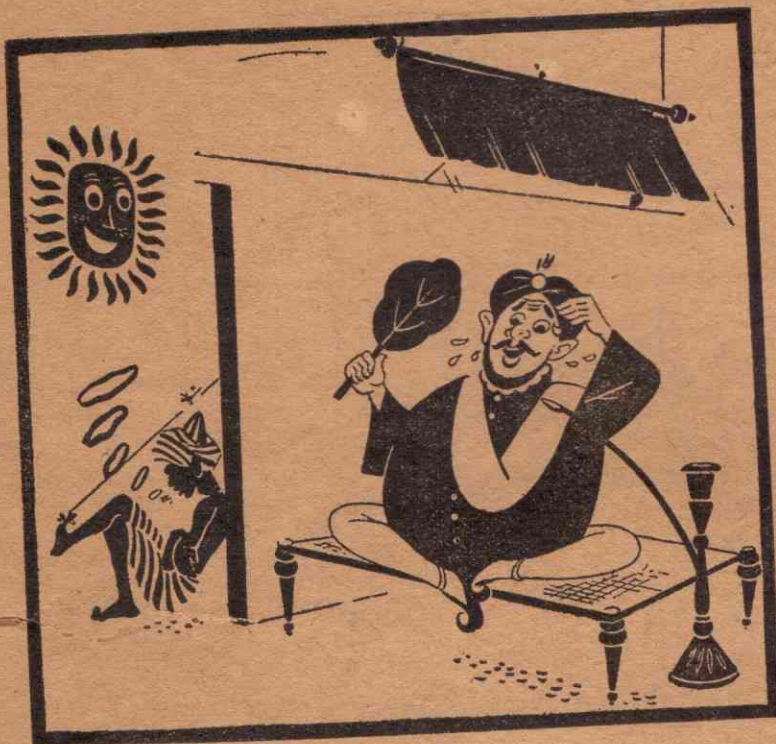
## पंखा कुली

भीतर बैठे राजा साहब
बाहर पंखाकुली बिराजै ।
इन्हें पलङ्ग पर नींद न आवै
उसकी नाक भूमि पर बाजै ।

पलङ्ग बिछाकर राजा जागे
और कुली बिन बिस्तर सोवे ।
सोते में भी काम करे वह
उसका कुछ तकलीफ न होवे ।

# बेवकूफ गुड़िया

( १ )

ऊब गई हूँ गुड़िया से मैं,
कहा नहीं यह करती है।
कितना ही आँखें दिखलाऊँ,
कुछ भी किन्तु न डरती है॥

( २ )

नहीं शहूर जरा भी इसको,
कहने को है लिखी पढ़ी।
कल दुपहर जब खाने बैठी,
कपड़ों पर ली गिरा कढ़ी॥

( ३ )

पड़ा मुझी को धोना उनको,
बड़ी दूर से टब लाकर।
पास उसी के लकड़ी पर वह,
गुड़िया भी बैठी आकर॥

( ४ )

जब मैं कपड़े लगी सुखाने,
छप छप कुछ बोला जल में।
पीछे फिर कर देखा तो,
पाया उसको गायब पल में॥

( ५ )

भीग गई रेशम की साड़ी,
गालों पर काजल फैला।
मैले पानी में डुबकी खा,
सारा बदन हुआ मैला॥

( ६ )

मर जाती यदि दौड़ न मुन्नी,
खींच उसे लेती टब से।
देखो इस गुड़िया के पीछे,
परेशान हूँ मैं कब से!

---

## आंधी-पानी

आंधी पानी लाए हम
छाते नए लगाए हम ॥

बिजली चमके चम-चम-चम
पानी बरसे झम-झम-झम

लेकिन भीग न पाये हम।
छाते नए लगाए हम ॥

तेज हवा है ओ-हो-हो।
मेरे छाते को पकड़ो।

आंधी पानी लाये हम।
छाते नए लगाए हम ॥

# कागज की नाव

यह काग़ज़ की नाव हमारी,
यह टब बना समुन्दर भारी।
मुन्नी चुन्नी चम्पा भोला,
मोहन सोहन श्याम मुरारी।

इस सागर के खड़े किनारे,
हम सब सङ्गी साथी प्यारे,
अपनी नाव चलाते हैं हम
इधर न आ तू तेज [illegible] रे !

हम सब भारत माँ चाकर,
हम सब वीर साहसी सुन्दर।
बन्धन-मुक्त करेंगे जग को;
सचमुच के जलयान चलाकर।

# मुन्नी और कुत्ता

मुन्नी थी छोटी सी लड़की
बड़ी दुलारी थी घर में।
तरह तरह के खेल खिलौने
ले सोती थी बिस्तर में॥

एक रोज चाचा का कुत्ता
पकड़ कहीं पाया उसने ।
मिला खिलौना मन का मेरे
यों कह चिल्लाया उसने ॥

इसे घुमाऊँगी सड़कों पर
लड़के सब ललचायेंगे।
रोयेंगे घर में जाकर पर
ऐसी चीज न पायें

इस प्रकार मन में खुश होती
निकली वह लड़की छोटी।
बड़ी शान से आज सँवारी
थी उसने अपनी चोटी॥

थी घमंड में भूली मुन्नी
जाती थी अकड़ी अकड़ी।
पर छिन में हा ढीली रस्सी
खिँची और हो गई कड़ी॥
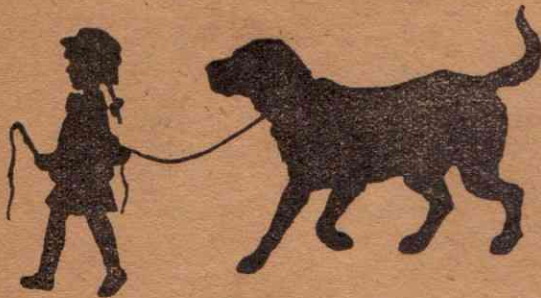
अब वह पीछे थी औ कुत्ता
आगे दौड़ लगाता था।
रस्सी के तनने से उसका
कटा हाथ भी जात था॥

और हाथ में गुड़िया की जो
मुन्नी लिये पिटारी थी।
लटक रही कुत्ते के मुह से
वह सारी की सारी थी॥

अपने अपने दरवाजों पर
सब बच्चे हो गये खड़े।
तड़ तड़ खूब बजायी ताली
हँस हँस करके लोट पड़े॥

ऊँ ऊँ करती किसी तरह
आई मुन्नी वापस घर में।
"नहीं सुलाऊँगी कुत्ते को"
मां से बोली—"बिस्तर में॥"

# पिल्ले की दौड़

देखो पिल्ला दौड़ा जाता
देखो कैसा पैर बढ़ाता
म्याऊँ म्याऊँ कहें बिल्लियाँ
देखो क्या ते... दिखलाता

रेल जायगी इससे हार
पिछड़ जायगी मोटर कार
म्याऊँ म्याऊँ, इससे पहले
शायद पहुँच न सकता तार

चला जा रहा जैसे तीर
नाम धरो इसका रणधीर
म्याऊँ म्याऊँ कहें बिल्लियाँ
थे ऐसे ही हनुमत बीर
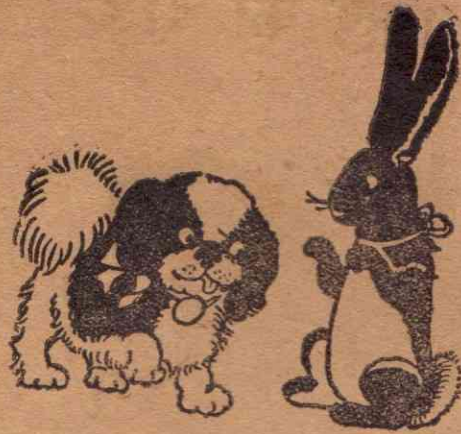
# कुत्ता कहे सुनो खरगोश

कुत्ता कहे सुनो खरगोश
खोलो अपने लम्बे कान।
कुत्ता कहे सुनो खरगोश
सब जीवों में कुकुर महान॥

कौवे को मिल सका न आदर
गदहे को मिल सका न मान।
नकल किया जिस जिस ने मेरी
होना पड़ा उसे हैरान॥

मीठी बोली बोल जगत में
पाते [illegible] आदर मान।
लेकिन आते कड़वी बोली से
प्यारा बनता घर-घर श्वान॥

कुत्ता कहे सुनो खरगोश
खोलो अपने लम्बे कान।
धर्मराज के साथ स्वर्ग में
जाने पाया केवल श्वान॥

# अम्मा के गीत

[ १ ]

आगे आगे गैय्या
पीछे पीछे दुम ।
दोनों गईं बन में ।
दोनों गईं गुम ।

आगे आगे गैय्या
पीछे पीछे दुम ।
दोनों आईं घर में ।
हम दुहें कि तुम ?

[ २ ]

बिल्ली बोले, म्याऊँ म्याऊँ ।
चूहे निकलें तो मैं खाऊँ ।
चूहे बोलें चें चें चें ।
बिल में आओ तो जानें ।
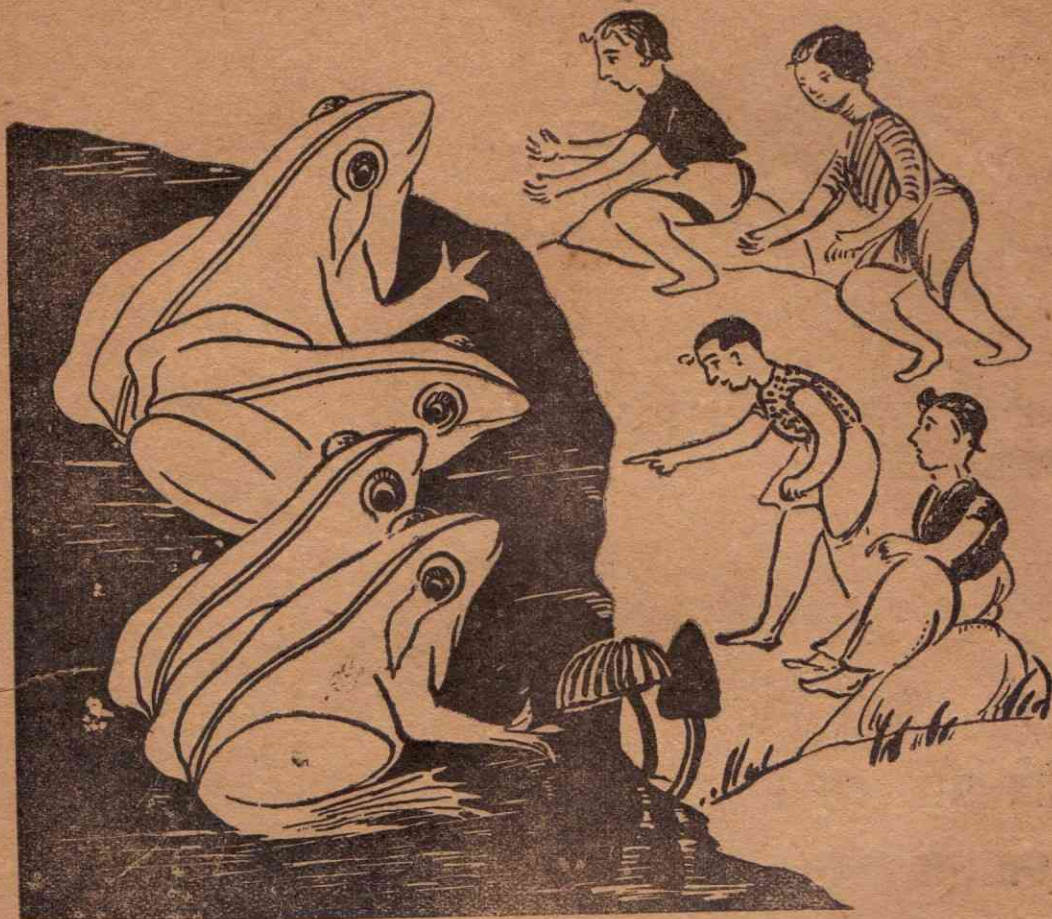
# चार तुम चार हम

लड़के चार मेंढक चार
ताल किनारे करें विचार
चारों लड़के यह हठ ठानें
थल में आओ तो हम जानें
चारों मेंढक यह हठ ठानें
जल में आओ तो हम जानें
कोई मान न सकते हार
लड़के चार मेंढक चार
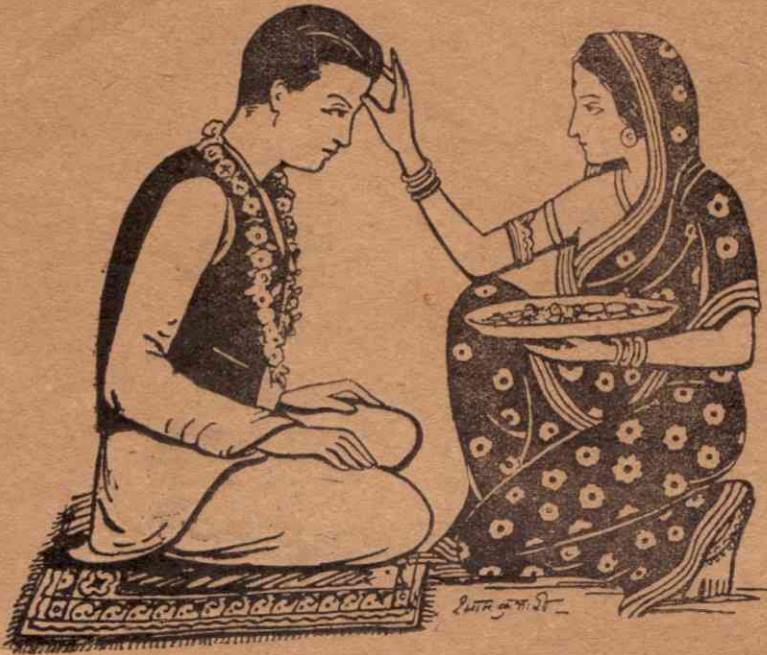
# भैया दूज

भैय्या दूज आगई आज ।
लखो जरा भाई का साज ।

बाल सँवारे पहने माला ।
आसन पर बैठे हैं लाला ।

टीका [illegible] लगाती है ।
प्रभु से यही मनाती है ।

करें देश का ये ंजन ।
गांधी और जवाहर बन ।

---

# होली है !
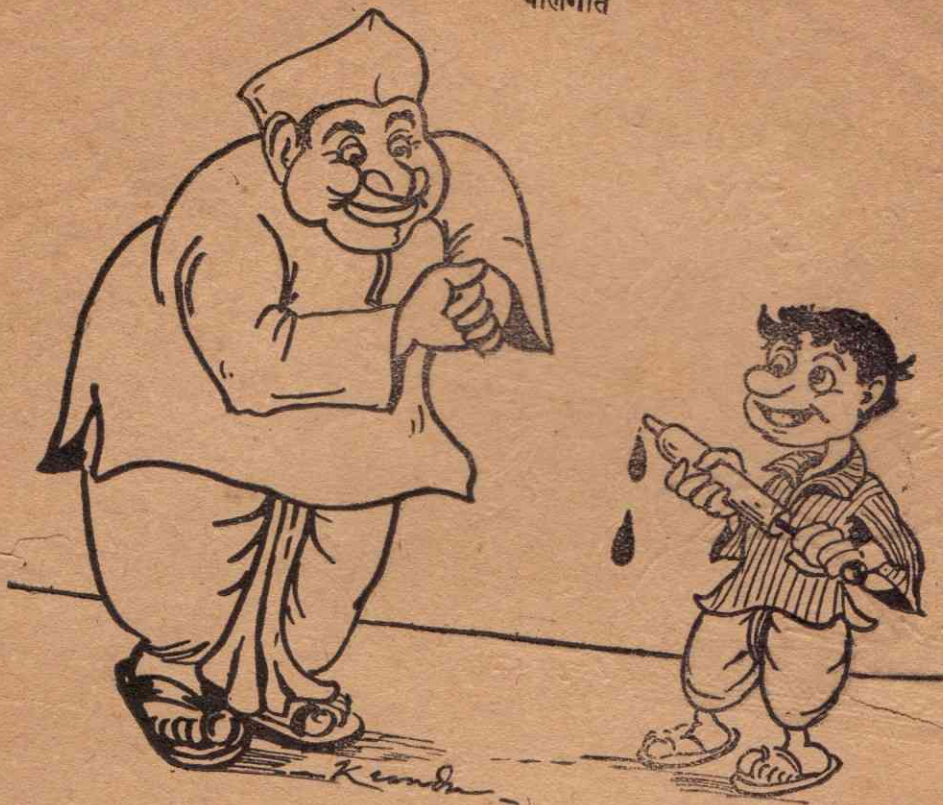
मोटू मल थे चले जा रहे
अपने कपड़े साफ बचाए।
रङ्ग भरी पिचकारी लेकर
छोटू सिंह इधर से आए।

लगे हाथ मलने मोटू मल—
'भैया मुझ पर रङ्ग न छोड़ो'
छोटू सिंह बोले—'होली है,
आज न मेरा साहस तोड़ो।'